9.

स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन

– डॉ0 दिनेश श्रीवास*

सेमेस्टर – I प्रश्नपत्र– IV (भाषा विज्ञान),
इकाई – 02 (स्वन प्रक्रिया)
स्वन विज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन, स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण

भाषा की लघुत्तम इकाई ध्वनि को कहा जाता है, इसे स्वन भी कहा जाता है। स्वन के अभाव में भाषा की कल्पना संभव नहीं है। हर भाषा में स्वनों का विशेष महत्व होता है। चूँकि किसी भाषा का प्रारंभ इन्हीं स्वनों से होता है इसलिए स्वनों का प्रभाव भाषा को प्रभावित करता है। स्वनों का

*जन्म : 10/12/1977, बिलासपुर (छ.ग.), माता : श्रीमती आशा देवी, पिता : श्री गणेश श्रीवास, शिक्षा : बी.एस–सी. (गणित), एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल. (हिन्दी), पी–एच.डी. – "मोहन राकेश के नाटक और व्यक्ति स्वातंत्र्यः एक विश्लेषण" शीर्षक पर, रूचि : कविता, कहानी, नाटक तथा शोध–पत्र लेखन में विशेष रूचि, कई काव्य संग्रह व कहानी संग्रह प्रकाशनाधीन, कार्य : 1. कई राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र का प्रकाशन, 2. दस से अधिक राष्ट्रीय सेमीनारों में शोध पत्र की प्रस्तुति, 3. सह–संयोजक के रूप राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन, 4. पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन कोरबा मुख्यालय में अनेक बार "हिन्दी पखवाड़ा" में मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि, 5. जनगणना, मतदान आदि राष्ट्रीय महत्व के कार्यों में राज्य स्तर के प्रशिक्षक के रूप में कार्य, अन्य : आपके माता–पिता कम शिक्षित होने के बावजूद आपके लिए जीवन–अनुशासन के श्रेष्ठ शिक्षक बने, सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शा. इंजी. विश्वेश्वरैया महाविद्यालय कोरबा, छ.ग., आवास : ए–71, रामाग्रीन सिटी, बिलासपुर (छ.ग.), मोबा. नं: 7770899636, 7974698680, Email ID: dineshsriwash77@gmail.com

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA
P. G. COLLEGE, KORBA (C. G.)

अध्ययन स्वनविज्ञान में किया जाता है। स्वन अथवा ध्वनि के लिए ग्रीक भाषा में 'phone' शब्द का प्रयोग होता रहा है। अंग्रेजी में भी 'phone' शब्द का प्रयोग होता है।

स्वनगुण

स्वनों अथवा ध्वनियों को स्वर ध्वनियों तथा व्यंजन ध्वनियों में विभाजित किया जाता है। स्वर और व्यंजन ध्वनियों (स्वनों) में स्पष्ट अंतर होते हैं। इनकी पहचान करना सरल भी है। लेकिन इन स्वर स्वनों (ध्वनियों) तथा व्यंजन स्वनों (ध्वनियों) के साथ कुछ अन्य तत्व भी प्रयुक्त होते हैं, जिनका अपना अलग अस्तित्व नहीं होता है। ये स्वर स्वनों तथा व्यंजन स्वनों पर आरोपित, गुथित अथवा संलग्न होते हैं। जैसे – खण्डेत्तर ध्वनि, खण्डेत्तर ध्वनियाँ (बलाघात, मात्रा आदि) भी इनके साथ प्रयुक्त होती हैं। अतः स्वनों के साथ खण्डेत्तर स्वनों तथा ध्वनि लक्षणों के एक साथ प्रयोग को स्वनगुण के अंतर्गत रखा जाता है। स्पष्ट है स्वनों (ध्वनियों) के साथ खण्डेत्तर ध्वनियों तथा ध्वनिलक्षणों का प्रयोग स्वनगुण में होता है। स्वर और व्यंजन ध्वनियों में इनके प्रयोग से उच्चारण में विविधता आ जाती है। शब्दों की एक अथवा एकाधिक ध्वनियों के ध्वनिगुण (स्वनगुण) परिवर्तन से अर्थ परिवर्तित हो जाता है।

स्वनगुणों को मुख्यतः चार सन्दर्भों में विभाजित किया जा सकता है– मात्रा, सूर, बलाघात और विराम।

मात्रा– ध्वनि के उच्चारण में लगने वाला समय। इसी को मात्रा ध्वनि कहते है। कम समय में उच्चारित ध्वनि की एक मात्रा को ह्रस्व कहते हैं। इसे इस प्रकार चिन्हों में व्यक्त करते हैं–

ह्रस्व – उ, इ,

दीर्घ – आ (ा), ई (ी), ऊ

प्लूत –ओ३म (ओउम्)। जैसे– रामू s s s.....(जहाँ s विलंबित होने का सूचक है।)

ह्रस्व ध्वनि के उच्चारण में एक चुटकी बजाने का समय लगता है। लेकिन दीर्घ में इससे दो या तीन या कई गुना समय लग जाता है– जैसे– 'राम' और 'रामा'। 'रामा' उच्चारण में राम के म की अपेक्षा रामा के मा (अर्थात आ) के उच्चारण में कई गुना समय लगता है।

G.V.P.G. COLLEGE ★ GOVT. ★ KORBA